

| | | |
|-------------------------|----|----|
| वेदाविनाशिनं नित्यम् | 2 | 21 |
| वेदाहं समतीतानि | 7 | 26 |
| वेदेषु यज्ञेषु तपःसु | 8 | 28 |
| वेपथुश्च शरीरे मे | 1 | 29 |
| व्यवसायात्मिका बुद्धिः | 2 | 41 |
| व्यामिश्रेणेव वाक्येन | 3 | 2 |
| व्यासप्रसादाच्छ्रुतवान् | 18 | 75 |

श

| | Ch. | Śl. |
|-----------------------------|-----|-----|
| शक्रोतीहैव यः सोढुम् | 5 | 23 |
| शनैः शनैरुपरमेत् | 6 | 25 |
| शमो दमस्तपः शौचम् | 18 | 42 |
| शरीरं यदवाप्नोति | 15 | 8 |
| शरीरवाङ्मनोभिर्यत् | 18 | 15 |
| शुक्लकृष्णे गती ह्येते | 8 | 26 |
| शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य | 6 | 11 |
| शुभाशुभफलैरेवम् | 9 | 28 |
| शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यम् | 18 | 43 |
| श्रद्धया परया तप्तम् | 17 | 17 |
| श्रद्धावाननसूयश्च | 18 | 71 |
| श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानम् | 4 | 39 |